सालुव वंश 1485–1505

संस्थापक – ''नरसिंह'' (प्रथम बलापहार)

Founder - "Narsingh" (First Balapahar)

★ तुलुव वंश (1505–1570)

संस्थापक : वीरन सिंह (1505–09)

Founder: Viran Singh (1505–09)

(द्वितीय बलापहार) **(second Balapahar)**

कृष्णदेवराय -II (1509 - 29) Krishnadevaraya (1509 – 29)



- विजयनगर साम्राज्य के महानतम शासक
  Greatest ruler of Vijayanagara Empire
- उपाधि - अभिनव भोज / आंध्र पितामह / आंध्र भोज
  Title - Abhinav Bhoj / Andhra Pitamah / Andhra Bhoj
- इनके समय को तेलुगू साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है
  His time is called the golden age of Telugu literature
- इन्होनें तेलुगु के प्रसिद्ध ग्रन्थ अमुक्त माल्यद (विस्वुवितीय) की रचना की
  He composed the famous Telugu book Amukt Malyad (Visvuvitiya).
- बाबर ने अपनी पुस्तक तुजुक-ए-बाबरी में दक्षिण का सबसे महान शासक कृष्णदेवराय II को बताया Babur in his book Tuzuk-e-Babri described Krishnadevaraya the greatest ruler of the south.

- उड़ीसा के शासक प्रताप रूद्र देव को हराकर तेलंगाना क्षेत्र को जीता

  Conquered the Telangana region by defeating Pratap Rudra Deva, the ruler of Orissa

- पुर्तगालियो से मित्रता की (घोड़े के लिए)

  Befriended the Portuguese (for the horse)

- 2 पुर्तगाली यात्री विजय नगर आये

  2 Portuguese travelers came to vijay nagar.
  1. बरबोसा Barbosa
  2. डोमिंगो पायस Domingo Paes

- अष्ट दिग्गज, इनके दरबार में रहते थे Eight Giants, lived in his court

  (8 विद्वान) → तेनालीराम (8 scholars) →Tenalirai

  Book → पांडूरंग महात्म्य Pandurang Mahatmya, पेदढन, नदीतिम्न

  पेदढन Pedthan, नदीतिम्न Naditimyn

अच्युदेव राय (1529 – 42) Achyudeva Raya (1529 – 42) →

नूनीज पुर्तगाली आये nunes came to portuguese

सदाशिव राय (1542-70) Sadashiv Rai (1542–70)

→ लेकिन वास्तविक शक्ति "रामाराय" (70 वर्ष)के हाथो में थी

But the real power was in the hands of "Ramaray" (70 years old)

विजय नगर के पतन का कारण The reason for the fall of Vijay Nagar

तालीकोटा का युद्ध - 23 Jan 1565

- रामाराय Vs अली आदिलशाह (जीता)

  Ramarai Vs Ali Adilshah (Won)

- राक्षसी तांगड़ी का युद्ध Battle of demonic Tangdi

अरविडु वंश (1570-1650)Aravidu dynasty (1570–1650)

- सबसे कमजोर वंश Weakest Lineage
- संस्थापक- तिरुमल Founder Tirumal
- राजधानी - पेनुगोण्डा Capital – Penugonda

वेंकट II Venkat II

- चंद्रगिरी (अंतिम राजधानी) Chandragiri (the last capital)
- अंतिम शासक - रंग तृतीय Last Ruler Rang III

सिक्ख एवं अंग्रेज Sikhs and the British



- सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय गुरु नानक (प्रथम गुरु) को है। गुरु नानक के अनुयायी ही सिक्ख कहलाए। ये बादशाह बाबर एवं हुमायूँ के समकालीन थे । The credit for establishing the Sikh sect goes to Guru Nanak (the first Guru). The followers of Guru Nanak were called Sikhs. They were contemporaries of emperors Babar and Humayun.

सिक्ख धर्म 10 गुरू हुए हैं।
→ प्रथम (गुरू - गुरू नानक देव)

बाबर 1526-1530
हुमायूँ (1530-1540)
(1555-1556)

- गुरुनानक ने गुरु का लंगर नामक निःशुल्क सहभागी भोजनालय स्थापित किए। गुरुनानक ने अनेक स्थानों पर संगत (धर्मशाला) और पंगत (लंगर) स्थापित किए । Guru Nanak established free community dining halls called Guru ka Langar. Guru Nanak established Sangat (Dharamshala) and Pangat (Langar) at many places.



- संगत और पंगत ने गुरुनानक के अनुयायियों के लिए एक संस्था का कार्य किया, जहाँ वे प्रतिदिन मिलते थे ।
- गुरु नानक की 1539 ई. में करतारपुर में मृत्यु हो गयी

Sangat and Pangat served as an institution for the followers of Guru Nanak, where they met daily.

Guru Nanak died in 1539 AD in Kartarpur

- गुरु अंगद *(1539-52 ई.)* सिक्खों के दूसरे गुरु थे । इनका प्रारम्भिक नाम लहना था।

Guru Angad (1539-52 AD) was the second Guru of the Sikhs. His original name was Lahna.

Example

I -> गुरु नानक देव

II -> गुरु अंगद



- इन्होंने नानक द्वारा शुरू की गई लंगर-व्यवस्था को स्थायी बना दिया। He made the langar system started by Nanak permanent.

imp.

- गुरुमुखी लिपि का आरंभ गुरु अंगद ने किया । Gurmukhi script was started by Guru Angad.

imp.

❖ सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदास (1552-1574 ई.) थे।

The third Guru of the Sikhs was Amardas (1552-1574 AD).

I -> गुरु नानक

II -> गुरु अंगद

III -> गुरु अमरदास



- अकबर ने गुरु अमरदास से गोविन्दवाल जाकर भेंट की और गुरु-पुत्री बीबी भानी को कई गाँव दान में दिए ।
- अमरदास ने 22 गद्दियों की स्थापना की और प्रत्येक पर एक महन्त की नियुक्ति की ।

· Akbar met Guru Amardas at Govindwal and donated several villages to the Guru's daughter Bibi Bhaani.

· Amardas established 22 gaddis and appointed a Mahant on each one.

- बीबी के पति रामदास (1574-1581 ई.) सिक्खों के चौथे गुरु हुए। अकबर ने बीबी भानी को 500 बीघा भूमि दी । गुरु रामदास ने इसी भूमि पर अमृतसर नामक जलाशय खुदवाया और अमृतसर नगर की स्थापना की । गुरु रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन को गुरु का पद सौंपा। इस प्रकार इन्होंने गुरु- पद को पैतृक बनाया ।Bibi's husband Ramdas (1574-1581 AD) became the fourth Guru of the Sikhs. Akbar gave 500 bighas of land to Bibi Bhani. Guru Ramdas dug a reservoir named Amritsar on this land and established the city of Amritsar. Guru Ramdas handed over the post of Guru to his third son Arjun. Thus he made the post of Guru hereditary

I II III IV

- गुरु अर्जुन (1581 - 1606 ई.) सिक्खों के पाँचवें गुरु हुए । इन्होंने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ की रचना की । Guru Arjun (1581 - 1606 AD) was the fifth Guru of the Sikhs. He composed the Adi Granth, the religious text of the Sikhs.

I → गुरु नानक
II " अंगद
III " अमरदास
IV " रामदास
V " अर्जुन देव



- गुरु अर्जुन ने अमृतसर जलाशय के मध्य में हरमन्दर साहब का निर्माण कराया। Guru Arjan built Harmandir Sahib in the middle of the Amritsar reservoir.



जलाशय/सरोवर ←

- राजकुमार खुसरो की सहायता करने के कारण जहाँगीर ने 1606 ई. में गुरु अर्जुन को मरवा दिया। Due to helping Prince Khusro, Jahangir got Guru Arjun killed in 1606 AD.

जहांगीर का पुत्र था और
अपने पिता के खिलाफ बगावत की।

Guru Arjun Dev Ji

❖ सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द (1606-1645 ई.) हुए।

The sixth Guru of the Sikhs was Hargobind (1606-1645 AD).



- सिक्खों के सातवें गुरु हरराय (1645-61 ई.) हुए। इन्होंने दारा शिकोह को मिलने आने पर आशीर्वाद दिया ।

The seventh Guru of the Sikhs was Har Rai (1645-61 AD). He blessed Dara Shikoh when he came to meet him.



- सिक्खों के आठवें गुरु हरकिशन (1661-64 ई.) हुए। इनकी मृत्यु चेचक से हो गयी । इन्हें दिल्ली जाकर गुरुपद के बारे में औरंगजेब को समझाना पड़ा था। The eighth Guru of the Sikhs was Harkishan (1661-64 AD). He died of smallpox. He had to go to Delhi and explain to Aurangzeb about the Gurushipp.



- सिक्खों के नौवें गुरु तेगबहादुर (*1664-75* ई.) हुए। इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने इन्हें वर्तमान शीशगंज में के निकट मरवा दिया। The ninth Guru of the Sikhs was Tegh Bahadur (1664-75 AD). Aurangzeb got him killed near the present Sheeshganj because he did not accept Islam.

चांदनी चौक (दिल्ली)



- सिक्खों के दसवें एवं अंतिम गुरु, गुरु गोविन्द सिंह (1675-1708 ई.) हुए। इनका जन्म 1666 ई. में पटना में हुआ था । The tenth and last Guru of the Sikhs was Guru Govind Singh (1675-1708 AD). He was born in Patna in 1666 AD.



- गुरुगोविन्द सिंह अपने को सच्चा पादशाह कहा। इन्होंने सिक्खों के लिए पाँच 'ककार' अनिवार्य किया अर्थात् प्रत्येक सिक्ख को केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा रखने की अनुमति दी और सभी लोगों को अपने नाम के अन्त में 'सिंह' शब्द जोड़ने के लिए कहा। Guru Gobind Singh called himself the true king. He made it compulsory for Sikhs to have five 'K's' i.e. every Sikh was allowed to keep Kesh, Kangha, Kirpan, Kachha and Kara and asked everyone to add the word 'Singh' at the end of their names.

- गुरुगोविन्द सिंह का निवास स्थान आनंदपुर साहिब था एवं कार्यस्थली पाओता थी । Guru Gobind Singh's residence was Anandpur Sahib and his workplace was Paota.

- गुरुगोविन्द सिंह ने फारसी में जफ़रनामा लिखे थे। Guru Gobind Singh wrote Zafarnaama in Persian.

- 1699 ई. में वैशाखी के दिन गुरुगोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की । पाहुल प्रणाली की शुरुआत भी गुरुगोविन्द सिंह ने की । Guru Gobind Singh founded the Khalsa sect on the day of Baisakhi in 1699 AD. Guru Gobind Singh also started the Pahul system.

- गुरुगोविन्द सिंह ने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ को वर्तमान रूप दिया और कहा कि अब 'गुरुवाणी' सिक्ख सम्प्रदाय के गुरु का कार्य करेगी। Guru Gobind Singh gave its present form to the Sikh religious text Adi Granth and said that now 'Guruvani' would act as the Guru of the Sikh community.

- गुरुगोविन्द सिंह की हत्या 1708 ई. में नांदेड़ नामक स्थान पर गुल खाँ नामक पठान ने कर दी । Guru Gobind Singh was murdered by a Pathan named Gul Khan at a place called Nanded in 1708 AD.

- बन्दा बहादुर : इनका जन्म 1670 ई. में पुंछ जिले के रजौली गाँव में हुआ था। इसके बचपन का नाम लक्ष्मणदास था । इनके पिता रामदेव भारद्वाज राजपूत थे । Banda Bahadur: He was born in 1670 in Rajauli village of Poonch district. His childhood name was Laxman Das. His father Ramdev Bhardwaj was a Rajput.

- बन्दा का उद्देश्य पंजाब में एक सिक्ख राज्य स्थापित करने का था। इसके लिए इन्होंने लौहगढ़ को राजधानी बनाया। इन्होंने गुरुनानक एवं गुरुगोविन्द सिंह नाम के सिक्के चलवाए । Banda's aim was to establish a Sikh state in Punjab. For this he made Lohgarh the capital. He issued coins in the name of Guru Nanak and Guru Govind Singh.

- बन्दा ने सरहिन्द के मुगल फौजदार वजीर खाँ की हत्या कर दी / मुगल बादशाह फर्रुखशियर के आदेश पर 1716 ई. में बन्दा सिंह को गुरुदासपुर नांगल नामक स्थान पर पकड़कर मौत के घाट उतार दिया गया । Banda killed the Mughal Faujdar of Sirhind, Wazir Khan. On the orders of Mughal Emperor Farrukhsiyar, Banda Singh was captured and killed at a place called Gurdaspur Nangal in 1716 AD.

- बन्दा की मृत्यु के बाद सिक्ख कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गए थे, 1748 ई. में नवाब कर्पूर सिंह की पहल पर सभी सिक्ख टुकड़ियों का दल खालसा में विलय हुआ । After the death of Banda, the Sikhs were divided into many small groups. In 1748 A.D., on the initiative of Nawab Karpur Singh, all the Sikh groups merged into Dal Khalsa.

- दल खालसा को जस्सा सिंह आहलूवालिया के नेतृत्व में रखा गया, जिसे बाद में बारह दलों में विभाजित किया गया। इसे मिसल कहा गया। Dal Khalsa was placed under the leadership of Jassa Singh Ahluwalia, which was later divided into twelve groups. These were called Misls.

- **रणजीत सिंह :** रणजीत सिंह का जन्म गुजराँवाला में 2 नवम्बर, 1780 ई. को सुकरचकिया मिसल के मुखिया महासिंह के यहाँ हुआ था । इनके दादा चरतसिंह ने 12 मिसलों में सुकरचकिया मिसल को प्रमुख स्थान दिला दिया । Ranjit Singh was born in Gujranwala on 2 November, 1780 to Maha Singh, the chief of Sukarchakia Misl. His grandfather Charat Singh gave Sukarchakia Misl a prominent place among the 12 Misls.

- 1798-99 ई. में रणजीत सिंह लाहौर का शासक बना। 25 अप्रैल, 1809 ई. को चार्ल्स मेटकाफ और महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि हुई । Ranjit Singh became the ruler of Lahore in 1798-99 AD. On 25 April 1809 AD, the Treaty of Amritsar was signed between Charles Metcalfe and Maharaja Ranjit Singh.

- रणजीत सिंह का राज्य चार सूबों में बँटा था— पेशावर, कश्मीर, मुल्तान एवं लाहौर । Ranjit Singh's kingdom was divided into four provinces – Peshawar, Kashmir, Multan and Lahore.

- महाराजा रणजीत सिंह का विदेश मंत्री फकीर अज़ीजुद्दीन एवं वित्त मंत्री दीनानाथ था । Maharaja Ranjit Singh's foreign minister was Fakir Azizuddin and finance minister was Dinanath.

- 7 जून, 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी । Ranjit Singh died on 7 June 1839.

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1845-46 ई. में एवं द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1849 ई. में हुआ। The First Anglo-Sikh War took place in 1845-46 AD and the Second Anglo-Sikh War took place in 1849 AD.

- अंग्रेजों एवं सिक्खों के मध्य हुई संधि :
- लाहौर की संधि : 9 मार्च, 1846 ई. ।
- भैरोंवाल की संधि : 22 दिसम्बर, 1846 ई.

Treaty between the British and the Sikhs:

- Treaty of Lahore: March 9, 1846.
- Treaty of Bhaironwal: December 22, 1846.

- द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध के दौरान पहली लड़ाई चिलियानवाला की लड़ाई सिक्ख नेता शेर सिंह एवं अंग्रेज कमांडर गफ के मध्य लड़ी गयी । दूसरी लड़ाई गुजरात के चिनाब नदी के किनारे चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 21 फरवरी, 1849 को लड़ी । इस युद्ध में सिक्ख बुरी तरह पराजित हुए । **During the Second Anglo-Sikh War, the first battle was fought at Chillianwala between Sikh leader Sher Singh and British commander Gough. The second battle was fought by the British under the leadership of Charles Napier on 21 February 1849 on the banks of Chenab River in Gujarat. The Sikhs were badly defeated in this war.**

- लार्ड डलहौजी की 29 मार्च, 1849 की घोषणा द्वारा संपूर्ण पंजाब का विलय अंग्रेजी राज्य में कर लिया । महाराजा दलीप सिंह को 50,000 पौंड की वार्षिक पेंशन दे दी गयी और उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेज दिया गया । सिक्ख राज्य का प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर को महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया । By Lord Dalhousie's proclamation of 29 March 1849, the whole of Punjab was annexed to the British Empire. Maharaja Dilip Singh was given an annual pension of 50,000 pounds and was sent to England for education. The famous Kohinoor diamond of the Sikh Empire was sent to Queen Victoria